क़ुरआनी दुआऐ

अध्याय 1 - ईमान क़ो पुखता करने की दुआ.

दुआ # 1 सुरः फ़ाते हा- आयात # 1

1:1. सारी तारीफ़ अल्लाह ही के लिये है जो तमाम क़ायनात का रब है ।

दुआ # 2 सुरः बक़रा - आयत # 45 और 46.

2:45. और (मुसीबत के वक्त) सब्र और नमाज़ का सहारा पकड़ो और अलबत्ता नमाज़ दूभर तो है मगर उन ख़ाक़सारों पर (नहीं) जो बख़ूबी जानते हैं

2:46. कि वह अपने परवरदिगार की बारगाह में हाज़िर होंगे और ज़रूर उसकी तरफ लौट जाएँ गे

दुआ # 3 सुरः बक़रा - आयत # 107.

2:107. क्या तुम नहीं जानते कि आसमान की सलतनत बे ुश्बहा ख़ास खुदा ही के लिए है और खुदा के सिवा तुम्हारा न कोई सरपरस्त है न मददगार?

दुआ # 4 सुरः बक़रा - आयत # 285.

2:285. हमारे पै ग़म्बर(मोहम्मद) जो कुछ उनपर उनके परवरदिगार की तरफ से नाज़िल किया गया है उस पर ईमान लाए और उनके (साथ) मोमिनीन भी (सबके) सब ख़ुदा और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाए (और कहते हैं कि) हम ख़ुदा के पै ग़म्बरोंमें से किसी में तफ़रक़ा नहीं करते और कहने लगे ऐ हमारे परवरदिगार हमने (ते राइरशाद) सुना.

दुआ # 5 सुरः बक़रा - आयत # 156.

2:156. कि जब उन पर कोई मुसीबत आ पड़ी तो वह (बे साख्ता) बोल उठे हम तो ख़ुदा ही के हैं और हम उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं.

दुआ # 6 सुरः बक़रा - आयत # 201.

2:201. और बाज़ बन्दे ऐसे हैं कि जो दुआ करते हैं कि ऐ मे रेपालने वाले मुझे दुनिया में ने अमत्दे और आख़िरत में सवाब दे और दोज़ख़ की बाग से बचा.

दुआ # 7 सुरः आले इमरान - आयत # 53.

3:53. और (ईसा से कहा) आप गवाह रहिए कि हम फ़रमाबरदार हैं.

दुआ # 8 सुरः आले इमरान - आयत # 8 और 9.

3:8. (और दुआ करते हैं) ऐ हमारे पालने वाले हमारे दिल को हिदायत करने के बाद डॉवाडोल न कर और अपनी बारगाह से हमें रहमत अता फ़रमा इसमें तो शक ही नहीं कि तू बड़ा दे नेवाला है !

3:9. ऐ हमारे परवरदिगार बे शकतू एक न एक दिन जिसके आने में शुबह नहीं लोगों को इक्ट्ठा करे गा(तो हम पर नज़रे इनायत रहे) बे शकख़ुदा अपने वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता

दुआ # 8 सुरः अन'आम - आयत # 161 से 165.

6:161.(ऐ रसूल) तुम उनसे कहो कि मुझे तो मेरे परवरदिगार ने सीधी राह यानि एक मज़बूत दीन इबराहीम के मज़हब की हिदायत फरमाई है बातिल से कतरा के चलते थे और मुशरे कीनसे न थे!

6.162. (ऐ रसूल) तुम उन लोगों से कह दो कि मे रीनमाज़ मे रीइबादत मे रा जीना मे रामरना सब ख़ुदा ही के वास्ते है जो सारे जहाँ का परवरदिगार है;

6:163: और उसका कोई शरीक़ नहीं और मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं सबसे पहले इस्लाम लाने वाला हूँ

6:164: (ऐ रसूल) तुम पूछो तो कि क्या मैं ख़ुदा के सिवा किसी और को परवरदिगार तलाश करुँ हालॉकि वह तमाम चीज़ो का मालिक है और जो शख्स कोई बुरा काम करता है उसका (वबाल) उसी पर है और कोई शख्स किसी दूसरे के गुनाह का बोझ नहीं उठाने का फिर तुम सबको अपने परवरदिगार के हुज़ूर में लौट कर जाना है तब तुम लोग जिन बातों में बाहम झगड़ते थे वह सब तुम्हें बता दे गा

6:165: और वही तो वह (ख़ुदा) है जिसने तुम्हें ज़मीन में (अपना) नायब बनाया और तुममें से बाज़ के बाज़ पर दर्जे बुलन्द किये ताकि वो (ने अमत्र तुम्हें दी है उसी पर तुम्हारा इमते हानकरे उसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बहुत जल्द अज़ाब करने वाला है और इसमें भी शक नहीं कि वह बड़ा बख्शने वाला मे हरबानहै.

दुआ # 10 सुरः रूम - आयत # 26

30:26. और जो लोग आसमानों में है सब उसी के है और सब उसी के ताबे ए फरमान हैं.

दुआ # 11 सुरः यासीन (36)- आयत # 22 से 34.

36.22: और मुझे क्या (ख़ब्त) हुआ है कि जिसने मुझे पै दाकिया है उसकी इबादत न करूँ हालाँ कितुम सब के बस (आख़िर) उसी की तरफ लौटकर जाओगे;

36.23: क्या मैं उसे छोड़कर दूसरों को माबूद बना लूँ अगर खुदा मुझे कोई तकलीफ पहुँचाना चाहे तो न उनकी सिफारिश ही मे रेकुछ काम आएगी और न ये लोग मुझे (इस मुसीबत से) छुड़ा ही सकेंगें?

36.24: अगर ऐसा करूँ) तो उस वक्त मैं यक़ीनी सरीही गुमराही में हूँ:

36.25 मैं तो तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान ला चुका हूँ मे रीबात सुनो और मानो ;मगर उन लोगों ने उसे सं गसार कर डाला.

36.26 तब उसे खुदा का हुक्म हुआ कि बे हिश्तमें जा (उस वक्त भी उसको क़ौम का ख्याल आया तो कहा)

दुआ # 12 सुरः हा'मीम (42) - आयत # 30 से 32.

42:30. और जो मुसीबत तुम पर पड़ती है वह तुम्हारे अपने ही हाथों की करतूत से और (उस पर भी) वह बहुत कुछ माफ कर दे ताहै.

42:31. और तुम लोग ज़मीन में (रह कर) तो ख़ुदा को किसी तरह हरा नहीं सकते और ख़ुदा के सिवा तुम्हारा न कोई दोस्त है और न मददगार.

42:32. और उसी की (क़ुदरत) की निशानियों में से समन्दर में (चलने वाले) (बादबानी जहाज़) है जो गोया पहाड़ हैं

दुआ # 13 सुरः हश्र (59) - आयत # 22 से 24

59.22: वही ख़ुदा है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला वही बड़ा मे हरबाननिहायत रहम वाला है

59.23: वही वह ख़ुदा है जिसके सिवा कोई क़ाबिले इबादत नहीं (हक़ीक़ी) बादशाह, पाक ज़ात (हर ऐब से) बरी अमन दे नेवाला निगे हबान ग़ालिब ज़बरदस्त बड़ाई वाला ये लोग जिसको (उसका) शरीक ठहराते हैं उससे पाक है.

59.24: वही ख़ुदा (तमाम चीज़ों का ख़ालिक) मुजिद सूरतों का बनाने वाला उसी के अच्छे अच्छे नाम हैं जो चीज़े सारे आसमान व ज़मीन में हैं सब उसी की तसबीह करती हैं, और वही ग़ालिब हिकमत वाला है.

दुआ # 14 सुरः मु'मिनुन (23)- आयत # 116

23.116: तो ख़ुदा जो सच्चा बादशाह (हर चीज़ से) बरतर व आला है उसके सिवा कोई माबूद नहीं (वहीं) अर्श बुर्जुग़ का मालिक है.

दुआ # 15 सुरः लुक़मान (31)- आयत # 26

31.26: जो कुछ सारे आसमान और ज़मीन में है (सब) ख़ुदा ही का है बे शक ख़ुदा तो (हर चीज़ से) बे परवा(और बहरहाल) क़ाबिले हम्दो सना है.

दुआ # 16 - सुरः काफ़ीरुन (109) - संपूर्ण

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है .।

109.1: (ऐ रसूल) तुम कह दो कि, ऐ काफिरों !

109.2: तुम जिन चीज़ों को पूजते हो, मैं उनको नहीं पूजता,

109.3: और जिस (ख़ुदा) की मैं इबादत करता हूँ उसकी तुम इबादत नहीं करते:

109.4: और जिन्हें तुम पूजते हो मैं उनका पूजने वाला नहीं,

109.5: और जिसकी मैं इबादत करता हूँ उसकी तुम इबादत करने वाले नहीं:

109.6: तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मे रेलिए मे रादीन.

दुआ # 17 सुरः अख़लास (112) - संपूर्ण

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है .।

112.1: (ऐ रसूल) तुम कह दो कि ख़ुदा एक है.

112.2: ख़ुदा बरहक़ बे नियाज़है.

112.3: न उसने किसी को जना न उसको किसी ने जना.

112.4: और उसका कोई हमसर नहीं.

अध्याय 2 -दुआ - आभार और कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए.

दुआ # 1 सुरः फ़ाते हा- आयात # 1 और 2.

1.1: तारीफ़ अल्लाह ही के लिये है जो तमाम क़ायनात का रब है.

1.2: अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है.

दुआ # 2 सुरः अल-आराफ़ - आयात # 206.

7.206: बे शकजो लोग (फरिशते बग़ै रह्न तुम्हारे परवरदिगार के पास मुक़र्रिब हैं और वह उसकी इबादत से सर कशी नही करते और उनकी तसबीह करते हैं और उसका सजदा करते हैं (सजदा).

दुआ # 3a सुरः युनुस - आयात # 10.

10.10: उन बाग़ों में उन लोगों का बस ये कौल होगा ऐ ख़ुदा तू पाक व पाकीज़ा है और उनमें उनकी बाहमी (आपसी) खै रसलाही(मुलाक़ात) सलाम से होगी

और उनका आख़िरी क़ौल ये होगा कि सब तारीफ ख़ुदा ही को सज़ावार है जो सारे जहाँ नका पालने वाला है.

दुआ # 3b सुरः बनी इसराइल- आयात # 108.

17.108: और कहते हैं कि हमारा परवरदिगार (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है बे शक्हमारे परवरदिगार का वायदा पूरा होना ज़रुरी था.

दुआ # 4 - सुरः अन-नम्ल - आयात # 15.

27.15: और इसमें शक नहीं कि हमने दाऊद और सुले मानको इल्म अता किया और दोनों ने (ख़ुश होकर) कहा ख़ुदा का शुक्र जिसने हमको अपने बहुते रेईमानदार बन्दों पर फज़ीलत दी.

दुआ # 5 - सुरः अन-नम्ल - आयात # 19.

27.19: तो सुले मानइस बात से मुस्कुरा के हँस पड़ें और अर्ज क़ी परवरदिगार मुझे तौफीक़ अता फरमा कि जै सीजै सीने अमेंततूने मुझ पर और मे रेवालदै नपर

नाज़िल फरमाई हैं मै (उनका) शुक्रिया अदा करुँ और मैं ऐसे ने ककाम करुँ जिसे तू पसन्द फरमाए और तू अपनी ख़ास मे हरबानीसे मुझे (अपने) ने कोकारबन्दों में दाखिल कर.

दुआ # 6 - सुरः अन-नम्ल - आयात # 40.

27.40: इस पर अभी सुले मानकुछ कहने न पाए थे कि वह शख्स (आसिफ़ बिन बरख़िया) जिसके पास किताबे (ख़ुदा) का किस कदर इल्म था बोला कि मै आप की पलक झपकने से पहले तख्त को आप के पास हाज़िर किए दे ताहूँ (बस इतने ही में आ गया) तो जब सुले मानने उसे अपने पास मौजूद पाया तो कहने लगे ये महज़ मे रेपरवरदिगार का फज़ल व करम है ताकि वह मे राइम्ते हानले कि मै उसका शुक्र करता हूँ या नाशुक्री करता हूँ और जो कोई शुक्र करता है वह अपनी ही भलाई के लिए शुक्र करता है और जो शख्स ना शुक्री करता है तो (याद रखिए) मे रापरवरदिगार यक़ीनन बे परवाऔर सख़ी है.

दुआ # 7 - सुरः फ़ातिर - आयात # 34.

35.34: और ये लोग (खुशी के लहजे में) कहेंगे खुदा का शुक्र जिसने हम से (हर क़िस्म का) रंज व ग़म दूर कर दिया बे शकहमारा परवरदिगार बड़ा बख्शने वाला (और) क़दरदान है,

दुआ # 8 - सुरः अल-जासिया - आयत # 36 और 37.

45.36: पस सब तारीफ ख़ुदा ही के लिए सज़ावार है जो सारे आसमान का मालिक और ज़मीन का मालिक (ग़रज़) सारे जहॉन का मालिक है.

45.37: और सारे आसमान व ज़मीन में उसके लिए बड़ाई है और वही (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है.

अध्याय 3 - दुआ - रहम और परे शानीदूर होने के के लिए..

दुआ # 1 - सुरः फ़ाते हा(1/5) - आयत # # 5.

1.5: हम ते रीही इबादत करते हैं, और तुझ ही से मदद मां गते है.

दुआ # 2 - सुरः फ़ाते हा- सं पूर्ण

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है .।

1.1: अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपालु और अत्यन्त दयावान हैं.

1.2: शं सा अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे सं सार का रब हैं.

1.3: बड़ा कृपालु, अत्यन्त दयावान हैं.

1.4: बदला दिए जाने के दिन का मालिक हैं.

1.5: हम ते रीबन्दगी करते हैं और तुझी से मदद माँ गतेहैं.

1.6: हमें सीधे मार्ग पर चला.

1.7: उन लोगों के मार्ग पर जो ते रेकृपापा हुए, जो न कोप के भागी हुए और न पथ ट

दुआ # 3 - सुरः बक़रा(2/286) - आयात # 286.

2.286: और मान लिया परवरदिगार हमें ते रीही मग़फ़िरत की (ख्वाहिश है) और ते रीही तरफ़ लौट कर जाना है ख़ुदा किसी को उसकी ताक़त से यादा तकलीफ़ नहीं दे ताउसने अच्छा काम किया तो अपने नफ़े के लिए और बुरा काम किया तो (उसका वबाल) उसी पर पडे ग़ाऐ हमारे परवरदिगार अगर हम भूल जाऐं या ग़लती करें तो हमारी गिरफ्त न कर ऐ हमारे परवरदिगार हम पर वै साबोझ न डाल जै साहमसे अगले लोगों पर बोझा डाला था, और ऐ हमारे परवरदिगार इतना बोझ जिसके उठाने की हमें ताक़त न हो हमसे न उठवा और हमारे कुसूरों से दरगुज़र कर और हमारे गुनाहों को बख्श दे और हम पर रहम फ़रमा तू ही हमारा मालिक है तू ही काफ़िरों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर.

दुआ # 4 - सुरः अल-आराफ़ (7/47) - आयात # 47.

7.47: और जब उनकी निगाहें पलटकर जहन्नुमी लोगों की तरफ जा पड़े गीं(तो उनकी ख़राब हालत दे खकरख़ुदा से अर्ज़ करे ंगा ऐ हमारे परवरदिगार हमें ज़ालिम लोगों का साथी न बनाना

दुआ # 5 - सुरः अल-आराफ़ (7/143) - आयात # 143.

7.143: और जब मूसा हमारा वायदा पूरा करते (कोहे ूर पर) आए और उनका परवरदिगार उनसे हम कलाम हुआ तो मूसा ने अर्ज़ किया कि ख़ुदाया तू मे झे अपनी एक झलक दिखला दे कि मैं तूझे दे खँ ख़ुदा ने फरमाया तुम मुझे हरगिज़ नहीं दे खसकते मगर हॉ उस पहाड़ की तरफ दे खो(हम उस पर अपनी तजल्ली डालते हैं) पस अगर (पहाड़) अपनी जगह पर क़ायम रहे तो समझना कि अनक़रीब मुझे भी दे खलोगे (वरना नहीं) फिर जब उनके परवरदिगार ने पहाड़ पर तजल्ली डाली तो उसको चकनाचूर कर दिया और मूसा बे होशहोकर गिर पड़े फिर जब होश में आए तो कहने लगे ख़ुदा वन्दा तू (दे खनेदिखाने से) पाक व पाकीज़ा है-मै ने ते रीबारगाह में तौबा की और मै सब से पहले ते रीअदम रवायत का यक़ीन करता हूँ.

दुआ # 6 - सुरः हूद - आयात # 47.

11.47: और अगर तु मुझे (मे रेकसूर न बख्श दे गाऔर मुझ पर रहम न खाएगा तो मैं सख्त घाटा उठाने वालों में हो जाऊँ गा(जब तूफान जाता रहा तो) हुक्म दिया गया ऐ नूह हमारी तरफ से सलामती और उन बरकतों के साथ कश्ती से उतरो.

दुआ # 7 - सुरः हूद - आयात # 90.

11.90: और अपने परवरदिगार से अपनी मग़फिरत की दुआ माँ गोंफिर उसी की बारगाह में तौबा करो बे शकमे रापरवरदिगार बड़ा मोहब्बत वाला मे हरबानहै.

दुआ # 8 - सुरः युसूफ - आयात # 53.

12.53: और (यूं तो) मै भी अपने नफ्स को गुनाहो से बे लौस नहीं कहता हूँ क्योंकि (मैं भी बशर हूँ और नफ्स बराबर बुराई की तरफ उभारता ही है मगर जिस पर मे रापरवरदिगार रहम फरमाए (और गुनाह से बचाए).

दुआ # 9 - सुरः अल-क़लम or Nun - आयात # 29.

68.29: वह बोले हमारा परवरदिगार पाक है बे शक्हमीं ही कुसूरवार हैं.

दुआ #10 - सुरः अल-अंबिया - आयात # 87.

21.87: और जुन्नून (यूनुस को याद करो) जबकि गुस्से में आकर चलते हुए और ये ख्याल न किया कि हम उन पर रोज़ी तंग न करेंगे (तो हमने उन्हें मछली के पेट में पहुँचा दिया) तो (घटाटोप) ऍंधे रेमें (घबराकर) चिल्ला उठा कि (परवरदिगार) ते रेसिवा कोई माबूद नहीं तू (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है बे शक मैं कुसूरवार हूँ

दुआ #11 - सुरः अन-नम्ल - आयत # 62 से 64.

27.62: भला वह कौन है कि जब मुज़तर उसे पुकारे तो दुआ कुबूल करता है और मुसीबत को दूर करता है और तुम लोगों को ज़मीन में (अपना) नायब बनाता है तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद है (हरगिज़ नहीं) उस पर भी तुम लोग बहुत कम नसीहत व इबरत हासिल करते हो!

27.63: भला वह कौन है जो तुम लोगों की ख़ुश्की और तरी की तारिक़ियों में राह दिखाता है और कौन उसकी बाराने रहमत के आगे आगे (बारिश की) ख़ुशखबरी ले करहवाओं को भे जताहै-क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) ये लोग जिन चीज़ों को ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं ख़ुदा उससे बालातर है.

27.64: भला वह कौन हैं जो ख़िलकत को नए सिरे से पै दाकरता है फिर उसे दोबारा (मरने के बाद) पै दाकरे गाऔर कौन है जो तुम लोगों को आसमान व ज़मीन से रिज़क़ दे ताहै- तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) (ऐ रसूल) तुम (इन मुशरे कीनसे) कहा दो कि अगर तुम सच्चे हो तो अपनी दलील पे शकरो.

दुआ # 12 - सुरः अल-क़सस - आयात # 24.

28.24: तब मूसा ने उन की (बकरियों) के लिए (पानी खीच कर) पिला दिया फिर वहाँ से हट कर छांव में जा बै ठे तो (चूँकि बहुत भूक थी) अर्ज क़ी परवरदिगार (उस वक्त) ज़ो ने अमततू मे रेपास भे जदे मै उसका सख्त हाजत मन्द हूँ

दुआ # 13 - सुरः अल-अनकबूत - आयत # 21 और 22.

29.21: जिस पर चाहे अज़ाब करे और जिस पर चाहे रहम करे और तुम लोग (सब के सब) उसी की तरफ लौटाए जाओगे.

29.22: और न तो तुम ज़मीन ही में ख़ुदा को ज़े रकर सकते हो और न आसमान में और ख़ुदा के सिवा न तो तुम्हारा कोई सरपरस्त है और न मददगार.

दुआ # 14 - सुरः या'सीन - आयात # 58.

36.58: मे हरबानपरवरदिगार की तरफ से सलाम का पै ग़ामआएगा.

दुआ # 15 - सुरः अस-साफफात - आयात # 75.

37.75: और नूह ने (अपनी कौम से मायूस होकर) हमें ज़रूर पुकारा था (दे खो हम) क्या खूब जवाब दे नेवाले थे

दुआ # 16 - सुरः अल-फ़तह आयात # 1.

48.1: (ऐ रसूल) ये हुबै दिया की सुलह नहीं बल्कि हमने हक़ीक़तन तुमको खुल्लम खुल्ला फते ह्अता की

दुआ # 17 - सुरः साद - आयत # 53 और 54.

38.53: (मोमिनों) ये वह चीज़ हैं जिनका हिसाब के दिन (क़यामत) के लिए तुमसे वायदा किया जाता है.

38.54: बे शक्ये हमारी (दी हुई) रोज़ी है जो कभी तमाम न होगी;

दुआ # 18 - सुरः अल-मोमिन - आयत # 1 से 3.

40.1: हा मीम.

40.2: (इस) किताब (कुरान) का नाज़िल करना (ख़ास बारगाहे) ख़ुदा से है जो (सबसे) ग़ालिब बड़ा वाक़िफ़कार है,

40.3: गुनाहों का बख्शने वाला और तौबा का कुबूल करने वाला सख्त अज़ाब दे नेवाला साहिबे फज़ल व करम है उसके सिवा कोई माबूद नहीं उसी की तरफ (सबको) लौट कर जाना है

दुआ # 19 - सुरः अल-फ़तह - आयात # 4.

48.4: वह (वही) ख़ुदा तो है जिसने मोमिनीन के दिलों में तसल्ली नाज़िल फरमाई ताकि अपने (पहले) ईमान के साथ और ईमान को बढ़ाएँ और सारे आसमान व ज़मीन के लशकर तो ख़ुदा ही के हैं और ख़ुदा बड़ा वाक़िफकार हकीम है –

दुआ # 20 - सुरः अल-हश्र (59/10) - आयत # 10.

59.10: और उनका भी हिस्सा है और जो लोग उन (मोहाजे रीम्र के बाद आए (और) दुआ करते हैं कि परवरदिगारा हमारी और उन लोगों की जो हमसे पहले ईमान ला चुके मग़फे रतकर और मोमिनों की तरफ से हमारे दिलों में किसी तरह का कीना न आने दे परवरदिगार बे शक्तू बड़ा यफीक़ निहायत रहम वाला है

दुआ # 21 - सुरः अल-मुम्तहीना - आयात 4 और 5.

60.4: (मुसलमानों) तुम्हारे वास्ते तो इबराहीम और उनके साथियों (के क़ौल व फे लका अच्छा नमूना मौजूद है) कि जब उन्होने अपनी क़ौम से कहा कि हम

तुमसे और उन (बुतों) से जिन्हें तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो बे ज़ारहैं हम तो तुम्हारे (दीन के) मुनकिर हैं और जब तक तुम यकता ख़ुदा पर ईमान न लाओ हमारे तुम्हारे दरमियान खुल्लम खुल्ला अदावत व दुशमनी क़ायम हो गयी मगर (हाँ) इबराहीम ने अपने (मुँह बोले) बाप से ये (अलबत्ता) कहा कि मैं आपके लिए मग़फ़िरत की दुआ ज़रूर करूँगा और ख़ुदा के सामने तो मैं आपके वास्ते कुछ एख्ते यारनहीं रखता ऐ हमारे पालने वाले (ख़ुदा) हमने तुझी पर भरोसा कर लिया है और ते रीही तरफ हम रूजू करते हैं:

60.5: और ते रीतरफ हमें लौट कर जाना है ऐ हमारे पालने वाले तू हम लोगों को काफ़िरों की आज़माइश (का ज़रिया) न क़रार दे और परवरदिगार तू हमें बख्श दे बे शक्तू ग़ालिब (और) हिकमत वाला है.

दुआ # 22 - सुरः अत-तागाबून - आयात # 13.

64.13: ख़ुदा (वह है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मोमिनो को ख़ुदा ही पर भरोसा करना चाहिए.

दुआ # 23 - सुरः युसूफ - आयात # 87.

12.87: ऐ मे रीफरज़न्द (एक बार फिर मिस्र) जाओ और यूसुफ और उसके भाई को (जिस तरह बने) ढूँढ के ले आओ और ख़ुदा की रहमत से ना उम्मीद न हो क्योंकि ख़ुदा की रहमत से काफिर लोगो के सिवा और कोई ना उम्मीद नहीं हुआ करता.

दुआ # 24 - सुरः अर-रअद 13 - आयत # 27 और 28.

13.27: और जिन लोगों ने कुफ्र एख़तियार किया वह कहते हैं कि उस (शख्स यानि तुम) पर हमारी ख्वाहिश के मुवाफिक़ कोई मौजिज़ा उसके परवरदिगार की तरफ से क्यों नहीं नाज़िल होता तुम उनसे कह दो कि इसमें शक़ नहीं कि ख़ुदा जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ दे ताहै.

13.28: और जिसने उसकी तरफ रुज़ू की उसे अपनी तरफ पहुँचने की राह दिखाता है (ये) वह लोग हैं जिन्होंने ईमान कुबूल किया और उनके दिलों को ख़ुदा की चाह से तसल्ली हुआ करती है.

दुआ # 25 - सुरः इब्राहीम 14 - आयात # 38.

14.38: और जिसने उसकी तरफ रुज़ू की उसे अपनी तरफ पहुँचने की राह दिखाता है (ये) वह लोग हैं जिन्होंने ईमान कुबूल किया और उनके दिलों को ख़ुदा की चाह से तसल्ली हुआ करती है:

दुआ # 26 - सुरः अल-अं बिया (21/83) - आयात # 83.

21.83: (कि भाग न जाएँ) और (ऐ रसूल) अय्यूब (का क़िस्सा याद करो) जब उन्होंने अपने परवरदिगार से दुआ की कि (ख़ुदा वन्द) बीमारी तो मे रेपीछे लग गई है और तू तो सब रहम करने वालोंसे (बढ़ कर है मुझ पर तरस खा.

दुआ # 27 - सुरः अल-मोमिनून - आयत # 106 और 107.

23.106: वह जवाब दे ंगऐ हमारे परवरदिगार हमको हमारी कम्बख्ती ने आज़माया और हम गुमराह लोग थे:

23.107: परवरदिगार हमको (अबकी दफा) किसी तरह इस जहन्नुम से निकाल दे फिर अगर दोबारा हम ऐसा करें तो अलबत्ता हम कुसूरवार हैं.

दुआ # 28 - सुरः अल-मोमिनून - आयात # 109.

23.109: मे रेबन्दों में से एक गिरोह ऐसा भी था जो (बराबर) ये दुआ करता था कि ऐ हमारे पालने वाले हम ईमान लाए तो तू हमको बख्श दे और हम पर रहम कर तू तो तमाम रहम करने वालों से बे हतरहै.

दुआ # 29 - सुरः अल-मोमिनून - आयात # 118.

23.118: और (ऐ रसूल) तुम कह दो परवरदिगार तू (मे रीउम्मत को) बख्श दे और तरस खा और तू तो सब रहम करने वालों से बे हतरहै.

अध्याय 4 - दुआ - मार्ग दर्श न के लिए

दुआ # 1 - सुरः फ़ाते हा(1/5 और 6) - आयत # 5 और 6.

1.5: हम ते रीबन्दगी करते हैं और तुझी से मदद माँ गतेहैं.

1.6: हमें सीधे मार्ग पर चला .

दुआ # 2 - सुरः अल-बक़रा (2/32) - आयात # 32.

2.32: तब फ़रिश्तों ने (आजिज़ी से) अर्ज़ की तू (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है हम तो जो कुछ तूने बताया है उसके सिवा कुछ नहीं जानते तू बड़ा जानने वाला, मसलहतों का पहचानने वाला है.

दुआ # 3 - सुरः अल-अन'आम (6/77) - आयात # 77.

6.77: फिर जब चाँ दको जगमगाता हुआ दे खातो बोल उठे (क्या) यही मे रा ख़ुदा है फिर जब वह भी ग़ुरुब हो गया तो कहने लगे कि अगर (कहीं) मे रा (असली) परवरदिगार मे रीहिदायत न करता तो मैं ज़रुर गुमराह लोगों में हो जाता.

दुआ # 4 - सुरः युनुस (10/109) - आयात # 109.

10.109: और (ऐ रसूल) तुम्हारे पास जो 'वही' भे जीजाती है तुम बस उसी की पै रवीकरो और सब्र करो यहाँ तक कि ख़ुदा तुम्हारे और काफिरों के दरमियान फै सलाफरमाए और वह तो तमाम फै सलाकरने वालों से बे हतरहै.

दुआ # 5 - सुरः अल-कहफ़ (18/24) - आयात # 24.

18.24: मगर इन्शा अल्लाह कह कर और अगर (इन्शा अल्लाह कहना) भूल जाओ तो (जब याद आए) अपने परवरदिगार को याद कर लो (इन्शा अल्लाह कह लो) और कहो कि उम्मीद है कि मे रापरवरदिगार मुझे ऐसी बात की हिदायत फरमाए जो रहनुमाई में उससे भी यादा क़रीब हो.

दुआ # 6 - सुरः अल-अं बिया (21/4) - आयात # 4.

21.4: (तो उस पर) रसूल ने कहा कि मे रापरवरदिगार जितनी बातें आसमान और ज़मीन में होती हैं खूब जानता है (फिर क्यों कानाफूसी करते हो) और वह तो बड़ा सुनने वाला वाक़िफ़कार है

दुआ # 7 - सुरः अल-कहफ़ (18/10) - आयात # 10.

18.10: कि एक बारगी कुछ जवान ग़ार में आ पहुँचे और दुआ की-ऐ हमारे परवरदिगार हमें अपनी बारगाह से रहमत अता फरमा-और हमारे वास्ते हमारे काम में कामयाबी इनायत कर.

दुआ # 8 - सुरः अल-कहफ़ (18/17) - आयात # 17.

18.17: (ग़रज़ ये ठान कर ग़ार में जा पहुँचे) कि जब सूरज निकलता है तो दे खे गक्कि वह उनके ग़ार से दाहिनी तरफ झुक कर निकलता है और जब ग़ुरुब (डुबता) होता है तो उनसे बायीं तरफ कतरा जाता है और वह लोग (मजे से) ग़ार के अन्दर एक वसीइ (बड़ी) जगह में (ले ट्टे हैं ये ख़ुदा (की कुदरत) की निशानियों में से (एक निशानी) है जिसको हिदायत करे वही हिदायत याफ्ता है और जिस को गुमराह करे तो फिर उसका कोई सरपरस्त रहनुमा हरगिज़ न पाओगे.

दुआ # 9 - सुरः अन-नम्ल (27/79) - आयात # 79.

27.79: तो (ऐ रसूल) तुम खुदा पर भरोसा रखो बे शकतुम यक़ीनी सरीही हक़ पर हो.

दुआ # 10 - सुरः अत-तक्वीर (81/29) - आयात # 29.

81.29: और तुम तो सारे जहॉन के पालने वाले ख़ुदा के चाहे बग़ै रकुछ भी चाह नहीं सकते.

दुआ # 11 - सुरः अल-फुर्क़ान (25/31) - आयात # 31.

25.31: और हमने (गोया ख़ुद) गुनाहगारों में से हर नबी के दुश्मन बना दिए हैं और तुम्हारा परवरदिगार हिदायत और मददगारी के लिए काफी है.

दुआ # 12 - सुरः अल-क़सस (28) - आयात # 22.

28.22: और जब मदियन की तरफ रुख़ किया (और रास्ता मालूम न था) तो आप ही आप बोले मुझे उम्मीद है कि मे रापरवरदिगार मुझे सीधे रास्ता दिखा दे.

दुआ # 13 - सुरः अल-अनकबूत (29/26) - आयात # 26.

29.26: तब सिर्फ लूत इबराहीम पर ईमान लाए और इबराहीम ने कहा मै तो दे सको छोड़कर अपने परवरदिगार की तरफ (जहाँ उसको मंज़ूर हो) निकल जाऊँ गा

दुआ # 14 - सुरः अस-साफफात (37/99) - आयात # 99.

37.99: तो हमने (आग सर्द गुलज़ार करके) उन्हें नीचा दिखाया और जब (आज़र ने) इबराहीम को निकाल दिया तो बोले मैं अपने परवरदिगार की तरफ जाता हूँ.

दुआ # 15 - सुरः अल-मआरिज (70/40 और 41) - आयत # 40 और 41.

70.40: तो मैं मशरिकों और मग़रिबों के परवरदिगार की क़सम खाता हूँ कि हम ज़रूर इस बात की कुदरत रखते हैं

70.41: कि उनके बदले उनसे बे हतरलोग ला (बसाएँ) और हम आजिज़ नहीं हैं

.

दुआ # 16 - सुरः अल-माइदा (5/48) - आयात # 48.

5.48: और (ऐ रसूल) हमने तुम पर भी बरहक़ किताब नाज़िल की जो किताब (उसके पहले से) उसके वक्त में मौजूद है उसकी तसदीक़ करती है और उसकी निगे हबान(भी) है जो कुछ तुम पर ख़ुदा ने नाज़िल किया है उसी के मुताबिक़ तुम भी हुक्म दो और जो हक़ बात ख़ुदा की तरफ़ से आ चुकी है उससे कतरा के उन लोगों की ख्वाहिशे नफ़सियानी की पै रवीन करो और हमने तुम में हर एक के वास्ते (हस्बे मसले हतेवक्त) एक एक शरीयत और ख़ास तरीक़े पर मुक़र्रर कर दिया और अगर ख़ुदा चाहता तो तुम सब के सब को एक ही (शरीयत की) उम्मत बना दे तामगर (मुख़तलिफ़ शरीयतों से) ख़ुदा का मतलब यह था कि जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें तुम्हारा इमते हानकरे बस तुम ने कीमें लपक कर आगे बढ़ जाओ और (यक़ीन जानो कि) तुम सब को ख़ुदा ही की तरफ़ लौट कर जाना है;

दुआ # 17 - सुरः मरयम (19/76) - आयात # 76.

19.76: और जो लोग राहे रास्त पर हैं खुदा उनकी हिदायत और यादा करता जाता है और बाक़ी रह जाने वाली ने कियाँतुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक सवाब की राह से भी बे हतरहै और अन्जाम के ऐतबार से (भी) बे हतरहै.

दुआ # 18 - सुरः अश-शु'अरा (26/62) - आयात # 62.

26.62: कि अब तो पकड़े गए मूसा ने कहा हरगिज़ नहीं क्योंकि मे रेसाथ मे रा परवरदिगार है.

दुआ # 19 - सुरः अन-नम्ल (27/93) - आयात # 93.

27.93: Aऔर तुम कह दो कि अल्हमदोलिल्लाह वह अनक़रीब तुम्हें (अपनी क़ुदरत की) निशानियाँ दिखा दे गातो तुम उन्हें पहचान लोगे और जो कुछ तुम करते हो तुम्हारा परवरदिगार उससे ग़ाफिल नहीं है.

दुआ # 20 - सुरः अल-क़सस (28/85) - आयात # 85.

28.85: (ऐ रसूल) ख़ुदा जिसने तुम पर क़ुरान नाज़िल किया ज़रुर ठिकाने तक पहुँचा दे गा(ऐ रसूल) तुम कह दो कि कौन राह पर आया और कौन सरीही गुमराही में पड़ा रहा.

दुआ # 21 - सुरः अज़-ज़ुखरुफ़ (43/27) - आयात # 27.

43.27: मगर उसकी इबादत करता हूँ, जिसने मुझे पै दाकिया तो वही बहुत जल्द मे रीहिदायत करे गा

अध्याय 5 - दुआ - औलाद के लिए

दुआ # 1 - सुरः बक़रा (2/117) - आयात # 117.

2.117: (वही) आसमान व ज़मीन का मोजिद है और जब किसी काम का करना ठान ले ताहै तो उसकी निसबत सिर्फ कह दे ताहै कि "हो जा" पस वह (खुद ब खुद) हो जाता है.

दुआ # 2 - सुरः हूद (11/123) - आयात # 123

11.123: और सारे आसमान व ज़मीन की पोशीदा बातों का इल्म ख़ास ख़ुदा ही को है और उसी की तरफ हर काम हिर फिर कर लौटता है तुम उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो और जो कुछ तुम लोग करते हो उससे ख़ुदा बे ख़बर नहीं.

दुआ # 3 - सुरः अर-रअद (13/16) - आयात # 16.

13.16: (ऐ रसूल) तुम पूछो कि (आख़िर) आसमान और ज़मीन का परवरदिगार कौन है (ये क्या जवाब दे ेंगा तुम कह दो कि अल्लाह है (ये भी कह दो कि क्या तुमने उसके सिवा दूसरे कारसाज़ बना रखे हैं जो अपने लिए आप न तो नफे पर क़ाबू रखते हैं न ज़रर (नुकसान) पर (ये भी तो) पूछो कि भला (कहीं) अन्धा और ऑंखों वाला बराबर हो सकता है (हरगिज़ नहीं) (या कहीं) अंधे राऔर उजाला बराबर हो सकता है (हरगिज़ नहीं) इन लोगों ने ख़ुदा के कुछ शरीक़ ठहरा रखे हैं क्या उन्होनें ख़ुदा ही की सी मख़लूक़ पै दाकर रखी है जिनके सबब मख़लूकात उन पर मुशतबा हो गई है (और उनकी खुदाई के क़ायल हो गए) तुम कह दो कि ख़ुदा ही हर चीज़ का पै दाकरने वाला और वही यकता और सिपर (सब पर) ग़ालिब है.

दुआ # 4 - सुरः अर-रूम (30/11) - आयात # 11.

30.11: ख़ुदा ही ने मख़लूकात को पहली बार पै दाकिया फिर वही दुबारा (पै दा करे गा फिर तुम सब लोग उसी की तरफ लौटाए जाओगे.

दुआ # 5 - सुरः अर-रूम (30/26 और 27) - आयात # 26 और 27.

30.26: और जो लोग आसमानों में है सब उसी के है और सब उसी के ताबे ए फरमान हैं.

30.27: और वह ऐसा (क़ादिरे मुत्तालिक़ है जो मख़लूकात को पहली बार पै दा करता है फिर दोबारा (क़यामत के दिन) पै दाकरे गाऔर ये उस पर बहुत आसान है और सारे आसमान व जमीन सबसे बालातर उसी की शान है और वही (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है.

दुआ # 6 - सुरः अल-अनकबूत (29/19) - आयात # 19.

29.19: बस क्या उन लोगों ने इस पर ग़ौर नहीं किया कि ख़ुदा किस तरह मख़लूकात को पहले पहल पै दाकरता है और फिर उसको दोबारा पै दाकरे गाये तो ख़ुदा के नज़दीक बहुत आसान बात है.

दुआ # 7 - सुरः ताःहाः (20/50) - आयात # 50.

20.50: मूसा ने कहा हमारा परवरदिगार वह है जिसने हर चीज़ को उसके (मुनासिब) सूरत अता फरमाई.

दुआ # 8 - सुरः अल-अं बिया (21/89 - आयात # 89.

21.89: और ज़करिया (को याद करो) जब उन्होंने (मायूस की हालत में) अपने परवरदिगार से दुआ की ऐ मे रेपालने वाले मुझे तन्हा (बे औलाद) न छोड़ और तू तो सब वारिसों से बे हतरहै.

दुआ # 9 - सुरः अस-साफफात 37/100) - आयात # 100.

37.100: वह अनक़रीब ही मुझे रूबरा कर दे गा(फिर ग़रज की) परवरदिगार मुझे एक ने कोकार (फरज़न्द) इनायत फरमा.

अध्याय 6 - दुआ - शहर में शां ती के लिए

दुआ # 1 - सुरः इब्राहीम (14/35) - आयात # 35.

14.35: याद करो जब इबराहीम ने कहा था, "मे रेरब! इस भूभाग (मक्का) को शान्तिमय बना दे और मुझे और मे रीसन्तान को इससे बचा कि हम मूर्तियों को पूजने लग जाए:

अध्याय 7 - दुआ - जं ग में बचने, विपत्ति और दुश्मन के लिए

दुआ # 1 - सुरः आले इमरान - आयात # 147.

3.147: उन्होंने कुछ नहीं कहा सिवाय इसके कि "ऐ हमारे रब! तू हमारे गुनाहों को और हमारे अपने मामले में जो ज़्यादती हमसे हो गई हो, उसे क्षमा कर दे और हमारे क़दम जमाए रख, और इनकार करने वालेलोगों के मुक़ाबले में हमारी सहायता कर।"

दुआ # 2 - सुरः अल-मोमिनून - आयात # 28.

23.28: फिर जब तू नौका पर सवार हो जाए और ते रेसाथी भी तो कह, शं सा है अल्लाह की, जिसने हमें ज़ालिम लोगों से छुटकारा दिया:

दुआ # 3 - सुरः अल-बक़रा - आयत # 249 और 250.

2.249: Sफिर जब तालूत लशकर समै त(शहर ऐलिया से) रवाना हुआ तो अपने साथियों से कहा दे खोआगे एक नहर मिले गीइस से यक़ीनन ख़ुदा तुम्हारे सब्र की आज़माइश करे गापस जो शख्स उस का पानी पीये गामुझे (कुछ वास्ता) नही रखता और जो उस को नही चखे गावह बे शकमुझ से होगा मगर हाँ जो अपने हाथ से एक (आधा चुल्लू भर के पी) ले तो कुछ हर्ज नही पस उन लोगों ने न माना और चन्द आदमियों के सिवा सब ने उस का पानी पिया ख़ै रजब तालूत और जो मोमिनीन उन के साथ थे नहर से पास हो गए तो (ख़ास मोमिनों के सिवा) सब के सब कहने लगे कि हम में तो आज भी जालूत और उसकी फौज से लड़ने की सकत नहीं मगर वह लोग जिनको यक़ीन है कि एक दिन ख़ुदा को मुँह दिखाना है बे धड़कबोल उठे कि ऐसा बहुत हुआ कि ख़ुदा के हुक्म से छोटी जमाअत बड़ी जमाअत पर ग़ालिब आ गयी है और ख़ुदा सब्र करने वालों का साथी है.

2.250: (ग़रज़) जब ये लोग जालूत और उसकी फौज के मुक़ाबले को निकले तो दुआ की ऐ मे रेपरवरदिगार हमें कामिल सब्र अता फरमा और मै दानेजं ग में हमारे क़दम जमाए रख और हमें काफिरों पर फते ह्इनायत कर.

दुआ # 4 - सुरः अन-निसा आयात # 75.

4.75: तुम्हें क्या हुआ है कि अल्लाह के मार्ग में और उन कमज़ोर पुरुषों, औरतों और बच्चों के लिए युद्ध न करो, जो ार्थनाएँ करते है कि "हमारे रब! तू हमें इस बस्ती से निकाल, जिसके लोग अत्याचारी है ।और हमारे लिए अपनी ओर से तू कोई समर्थक नियुक्त कर और हमारे लिए अपनी ओर से तू कोई सहायक नियुक्त कर।".

दुआ # 5 - सुरः युनुस - आयत # 85 और 86.

10.85: इसपर वे बोले, "हमने अल्लाह पर भरोसा किया। ऐ हमारे रब! तू हमें अत्याचारी लोगों के हाथों आज़माइश में न डाल:

10.86: "और अपनी दयालुता से हमें इनकार करने वालोंसे छुटकारा दिया।".

दुआ # 6 - सुरः अल-क़सस - आयात # 21.

28.21: फिर वह वहाँ से डरता और ख़तरा भाँ पताहुआ निकल खड़ा हुआ। उसने कहा, "ऐ मे रेरब! मुझे ज़ालिम लोगों से छुटकारा दे "।

दुआ # 7 - सुरः अल-अनकबूत - आयत # # 30.

29.30: उसने कहास "ऐ मे रेरब! बिगाड़ पै दाकरने वालेलोगों के मुक़ावले में मे रीसहायता कर।".

दुआ # 8 - सुरः ताःहाः (20) - आयत # 45 और 46.

20.45: दोनों ने कहा, "ऐ हमारे रब! हमें इसका भय है कि वह हमपर ज़्यादती करे या सरकशी करने लग जाए।".

20.46: कहा, "डरो नहीं, मै तुम्हारे साथ हूँ। सुनता और दे खताहूँ.

अध्याय 8 - दुआ - हिफाज़त के लिए

दुआ # 1 - सुरः अल-बक़रा आयात 255.

2.255: ख़ुदा ही वो ज़ाते पाक है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं (वह) ज़िन्दा है (और) सारे जहान का संभालने वाला है उसको न ऊँघ आती है न नींद जो कुछ आसमानो में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) उसी का है कौन ऐसा है जो बग़ै रउसकी इजाज़त के उसके पास किसी की सिफ़ारिश करे जो कुछ उनके सामने मौजूद है (वह) और जो कुछ उनके पीछे (हो चुका) है (खुदा सबको) जानता है और लोग उसके इल्म में से किसी चीज़ पर भी अहाता नहीं कर सकते मगर वह जिसे जितना चाहे (सिखा दे) उसकी कुर्सी सब आसमानों और ज़मीनों को घे रे हुये है और उन दोनों (आसमान व ज़मीन) की निगे हदाश्तउसपर कुछ भी मुश्किल नहीं और वह आलीशान बुजुर्ग़ मरतबा है.

दुआ # 2 - सुरः अत-तौबा - आयत # # 51.

9.51: कह दो, "हमें कुछ भी पे शनहीं आ सकता सिवाय उसके जो अल्लाह ने लिख दिया है ।वही हमारा स्वामी है ।और ईमानवालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।".

दुआ # 3 - सुरः मरयम आयात # 65.

19.65: आकाशों और धरती का रब है और उसका भी जो इन दोनों के मध्य है । अतः तुम उसी की बन्दगी पर जमे रहो। क्या तुम्हारे ज्ञान में उस जै साकोई है?

दुआ # 4 - सुरः अल-फुर्क़ान आयात # 18.

25.18: वे कहेंगे, "महान और उच्च है तू! यह हमसे नहीं हो सकता था कि तुझे छोड़कर दूसरे संरक्षक बनाएँ ।किन्तु हुआ यह कि तूने उन्हें औऱ उनके बाप-दादा को अत्यधिक सुख-सामग्री दी, यहाँ तक कि वे अनुस्मृति को भुला बै ठेऔर विन ट होने वालेलोग होकर रहे "।

दुआ # 5 - सुरः हाः मीम: / अस सजदा आयात # 36.

41.36: और यदि शै तानकी ओर से कोई उकसाहट तुम्हें चुभे तो अल्लाह की शरण माँ गलो। निश्चय ही वह सबकुछ सुनता, जानता है.

दुआ # 6 - सुरः युसूफ - आयात # 101.

12.101: मे रेरब! तुने मुझे रा य दान किया और मुझे घटनाओं और बातों के नि कर्ष तक पहुँचना सिखाया। आकाश और धरती के पै दाकरने वाले दुनिया और आख़िरत में तू ही मे रासं रक्षक मि है ।तू मुझे इस दशा से उठा कि मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला।".

दुआ # 7 - सुरः बनी इसराइल - आयत # # 110 और 111.

17.110: कह दो, "तुम अल्लाह को पुकारो या रहमान को पुकारो या जिस नाम से भी पुकारो, उसके लिए सब अच्छे ही नाम है "। और अपनी नमाज़ न बहुत ऊँ ची आवाज़ से पढ़ो और न उसे बहुत चुपके से पढ़ो, बल्कि इन दोनों के बीच मध्य मार्ग अपनाओ.

17.111: और कहो, " शं सा अल्लाह के लिए है, जिसने न तो अपना कोई बे टा बनाया और न बादशाही में उसका कोई सहभागी है और न ऐसा ही है कि वह

दीन-हीन हो जिसके कारण बचाव के लिए उसका कोई सहायक मि हो।" और बड़ाई बयान करो उसकी, पूर्ण बड़ाई.

दुआ # 8 - सुरः आले इमरान - आयात # 13.

3.13: तुम्हारे लिए उन दोनों गिरोहों में एक निशानी है जो (बद्र की) लड़ाई में एक-दूसरे के मुक़ाबिल हुए। एक गिरोह अल्लाह के मार्ग में लड़ रहा था, जबकि दूसरा विधर्मी था। ये अपनी आँ खोंदे खरहे थे कि वे उनसे दुगने है ।अल्लाह अपनी सहायता से जिसे चाहता है, शक्ति दान करता है ।दृ टिवान लोगों के लिए इसमें बड़ी शिक्षा-सामग्री है.

दुआ # 9 - सुरः अल-आराफ़ - आयात # 126.

7.126: "और तू के बलइस क्रोध से हमें क ट पहुँचाने के लिए पीछे पड़ गया है कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान ले आए। हमारे रब! हमपर धै र्यउड़े ल दे और हमें इस दशा में उठा कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो।".

दुआ # 10 - सुरः अल-अनफ़ाल - आयात # 18.

8.18: यह तो हुआ, और यह (जान लो) कि अल्लाह इनकार करने वालोंकी चाल को कमज़ोर कर दे ने वाला है.

दुआ # 11 - सुरः इब्राहीम - आयत # 11 और 12.

14.11: उनके रसूलों ने उनसे कहा, "हम तो वास्तव में बस तुम्हारे ही जै से मनु ष्य है, किन्तु अल्लाह अपने बन्दों में से जिनपर चाहता है एहसान करता है और यह हमारा काम नहीं कि तुम्हारे सामने कोई माण ले आएँ ।यह तो बस अल्लाह के आदे शके पश्चात ही सम्भव है; और अल्लाह ही पर ईमानवालों को भरोसा करना चाहिए.

14.12: आख़िर हमें क्या हुआ है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, जबकि उसने हमें हमारे मार्ग दिखाए है? तुम हमें जो तकलीफ़ पहुँचा रहे हो उसके मुक़ाबले में हम धै र्यसे काम लें गे भरोसा करने वालोंको तो अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।".

दुआ # 12 - सुरः अल-कहफ़ (18) - आयात # 98.

18.98: जुलक़रनै नने (दीवार को दे खकर) कहा ये मे रेपरवरदिगार की मे हरबानी है मगर जब मे रेपरवरदिगार का वायदा (क़यामत) आये गातो इसे ढहा कर हमवार कर दे गाऔर मे रेपरवरदिगार का वायदा सच्चा है.

दुआ # 13 - सुरः मरयम - आयात # 18.

19.18: (वह उसको दे खकरघबराई और) कहने लगी अगर तू परहे ज़गारहै तो मैं तुझ से खुदा की पनाह माँ गतीहूँ.

दुआ # 14 - सुरः अश-शु'अरा - आयात 77.

26.77: मगर सारे जहाँ का पालने वाला जिसने मुझे पै दाकिया (वही मे रादोस्त है);

दुआ # 15 - सुरः अद-दूखान (44) - आयात 20 और 21.

44.20: और इस बात से कि तुम मुझे सं गसार करो मैं अपने और तुम्हारे परवरदिगार (ख़ुदा) की पनाह मां गता हूँ:

दुआ # 16 - सुरः अल-मोमिन (40) - आयात # 27.

40.27: और मूसा ने कहा कि मैं तो हर मुताकब्बिर से जो हिसाब के दिन (क़यामत पर ईमान नहीं लाता) अपने और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह ले चुका हूं .

दुआ # 17 - सुरः अल-हुजुरात (49) - आयात # 18.

49.18: बे शकख़ुदा तो सारे आसमानों और ज़मीन की छिपी हुई बातों को जानता है और जो तुम करते हो ख़ुदा उसे दे खरहा है.

दुआ # 18 - सुरः याः सीन: (36/9) - आयात # 9.

36.9: हमने एक दीवार उनके आगे बना दी है और एक दीवार उनके पीछे फिर ऊपर से उनको ढाँ कदिया है तो वह कुछ दे खनहीं सकते.

अध्याय 9 - दुआ - धन और समृद्धि के लिए

दुआ # 1 - सुरः आले इमरान (3) - आयत # 73 और 74.

3.73: और तुम्हारे दीन की पै रवरीकरे उसके सिवा किसी दूसरे की बात का ऐतबार न करो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि बस ख़ुदा ही की हिदायत तो हिदायत है (यहूदी बाहम ये भी कहते हैं कि) उसको भी न (मानना) कि जै सा(उम्दा दीन) तुमको दिया गया है, वै साकिसी और को दिया जाय या तुमसे कोई शख्स ख़ुदा के यहॉ झगड़ा करे (ऐ रसूल तुम उनसे) कह दो कि (ये क्या ग़लत ख्याल है) फ़ज़ल (व करम) ख़ुदा के हाथ में है वह जिसको चाहे दे और ख़ुदा बड़ी गुन्जाईश वाला है (और हर शै को)े जानता है .

3.74: जिसको चाहे अपनी रहमत के लिये ख़ास कर ले ताहै और ख़ुदा बड़ा फ़ज़लों करम वाला हे.

दुआ # 2 - सुरः अश-शु'अरा - आयात # 19.

26.19: और तुम अपना वह काम (ख़ून क़िब्ती) जो कर गए और तुम (बड़े) नाशुक्रे हो.

दुआ # 3 - सुरः अज़-ज़ारियात (51) - आयात # 58.

51.58: ख़ुदा ख़ुद बड़ा रोज़ी दे नेवाला ज़ोरावर (और) ज़बरदस्त है.

दुआ # 4 - सुरः अल-जुमुआ (62) - आयात # 4.

62.4: ख़ुदा का फज़ल है जिसको चाहता है अता फरमाता है और ख़ुदा तो बड़े फज़ल (व करम) का मालिक है.

दुआ # 5 - सुरः आले इमरान (3) - आयत # 26 और 27.

3.26: (ऐ रसूल) तुम तो यह दुआ मॉगों कि ऐ ख़ुदा तमाम आलम के मालिक तू ही जिसको चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले और तू ही जिसको चाहे इ ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे हर तरह की भलाई ते रेही हाथ में है बे शक्तू ही हर चीज़ पर क़ादिर है .

3.27: तू ही रात को (बढ़ा के) दिन में दाख़िल कर दे ताहै (तो) रात बढ़ जाती है और तू ही दिन को (बढ़ा के) रात में दाख़िल करता है (तो दिन बढ़ जाता है) तू ही बे जान(अन्डा नुत्फ़ा वगै रह) से जानदार को पै दाकरता है और तू ही जानदार से बे जाननुत्फ़ा (वगै रह) निकालता है और तू ही जिसको चाहता है बे हिसाबरोज़ी दे ताहै.

दुआ # 6 - सुरः अल-क़सस (28) - आयात # 82.

28.82: और जिन लोगों ने कल उसके जाह व मरतबे की तमन्ना की थी वह (आज ये तमाशा दे खकर) कहने लगे अरे माज़अल्लाह ये तो ख़ुदा ही अपने बन्दों से जिसकी रोज़ी चाहता है कुशादा कर दे ताहै और जिसकी रोज़ी चाहता है तंग कर दे ताहै और अगर (कहीं) ख़ुदा हम पर मे हरबानीन करता (और इतना माल दे दे ता) तो उसकी तरह हमको भी ज़रुर धॅसा दे ताऔर माज़अल्लाह (सच है) हरगिज़ कुफ्फार अपनी मुरादें न पाएँ ेंग़

दुआ # 7 - सुरः सबा (34) - आयात # 39.

34.39: (ऐ रसूल) तुम कह दो कि मे रापरवरदिगार अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर दे ताहै और (जिसके लिए चाहता है) तं ग कर दे ता है और जो कुछ भी तुम लोग (उसकी राह में) ख़र्च करते हो वह उसका ऐवज दे गा और वह तो सबसे बे हतररोज़ी दे ने वालाहै.

दुआ # 8 - सुरः साद (38) - आयात # 35.

38.35: फिर (सुले मानने मे रीतरफ) रूजू की (और) कहा परवरदिगार मुझे बख्श दे और मुझे वह मुल्क अता फरमा जो मे रेबाद किसी के वास्ते शायाँ हन हो इसमें तो शक नहीं कि तू बड़ा बख्शने वाला है;

अध्याय 10 - दुआ - परमात्मा सबके जीवन में सहायता करे उसके लिए

दुआ # 1 - सुरः हूद (11) - आयात # 56.

11.56: मै तो सिर्फ ख़ुदा पर भरोसा रखता हूँ जो मे राभी परवरदिगार है और तुम्हारा भी परवरदिगार है और रुए ज़मीन पर जितने चलने वाले हैं सबकी चोटी उसी के साथ है इसमें तो शक़ ही नहीं कि मे रापरवरदिगार (इन्साफ की) सीधी राह पर है.

दुआ # 2 - सुरः अर-रअद (13) - आयात # 36.

13.36: और (ए रसूल) जिन लोगों को हमने किताब दी है वह तो जो (एहकाम) तुम्हारे पास नाज़िल किए गए हैं सब ही से खुश होते हैं और बाज़ फिरके उसकी बातों से इन्कार करते हैं तुम (उनसे) कह दो कि (तुम मानो या न मानो) मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मै ख़ुदा ही की इबादत करु और किसी को उसका शरीक

न बनाऊ मै (सब को) उसी की तरफ बुलाता हूँ और हर शख़्श को हिर फिर कर उसकी तरफ जाना है.

दुआ # 3 - सुरः अज़-ज़ुखरुफ़ (43) - आयात # 64.

43.64: बे शक़ख़ुदा ही मे राऔर तुम्हार परवरदिगार है तो उसी की इबादत करो यही सीधा रास्ता है:

दुआ # 4a - सुरः युनुस (10) - आयात # 21.

10.21: और लोगों को जो तकलीफ पहुँची उसके बाद जब हमने अपनी रहमत का जाएक़ा चखा दिया तो यकायक उन लोगों से हमारी आयतों में हीले बाज़ी शुरू कर दी (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तद्बीर में ख़ुदा सब से यादा ते ज़है तुम जो कुछ मक्कारी करते हो वह हमारे भे जेहुए (फरिश्ते) लिखते जाते हैं.

दुआ # 4b - सुरः अल-ह ज (22) - आयात # 78.

22.78: ताकि तुम कामयाब हो और जो हक़ जिहाद करने का है खुदा की राह में जिहाद करो उसी नें तुमको बरगुज़ीदा किया और उमूरे दीन में तुम पर किसी तरह की सख्ती नहीं की तुम्हारे बाप इबराहीम ने मजहब को (तुम्हारा मज़हब बना दिया उसी (खुदा) ने तुम्हारा पहले ही से मुसलमान (फरमाबरदार बन्दे) नाम रखा और कुरान में भी (तो जिहाद करो) ताकि रसूल तुम्हारे मुक़ाबले में गवाह बने और तुम पाबन्दी से नामज़ पढ़ा करो और ज़कात दे तेरहो और खुदा ही (के एहकाम) को मज़बूत पकड़ो वही तुम्हारा सरपरस्त है तो क्या अच्छा सरपरस्त है और क्या अच्छा मददगार है !

दुआ # 5 - सुरः अन-निसा (4) - आयात # 87.

4.87: अल्लाह तो वही परवरदिगार है जिसके सिवा कोई क़ाबिले परस्तिश नहीं वह तुमको क़यामत के दिन जिसमें ज़रा भी शक नहीं ज़रूर इकट्ठा करे गाऔर ख़ुदा से बढ़कर बात में सच्चा कौन होगा?

दुआ # 6 - सुरः ताःहाः (20) - आयात # 98.

20.98: तुम्हारा माबूद तो बस वही ख़ुदा है जिसके सिवा कोई और माबूद बरहक़ नहीं कि उसका इल्म हर चीज़ पर छा गया है.

दुआ # 7 - सुरः अन-निसा (4) - आयात # 45.

4.45: और ख़ुदा तुम्हारे दुशमनों से ख़ूब वाक़िफ़ है और दोस्ती के लिए बस ख़ुदा काफ़ी है और हिमायत के वास्ते भी ख़ुदा ही काफ़ी है.

दुआ # 8 - सुरः युनुस (10) - आयात # 82.

10.82: और ख़ुदा सच्ची बात को अपने कलाम की बरकत से साबित कर दिखाता है अगरचे गुनाहगारों को ना गॅवार हो.

दुआ # 9 - सुरः अन-निसा (4) - आयात # 70.

4.72: और तुममें से बाज़ ऐसे भी हैं जो (जे हादसे) ज़रूर पीछे रहेंगे फिर अगर इत्तेफ़ाक़न तुमपर कोई मुसीबत आ पड़ी तो कहने लगे ख़ुदा ने हमपर बड़ा फ़ज़ल किया कि उनमें (मुसलमानों) के साथ मौजूद न हुआ.

दुआ # 10 - सुरः अन-निसा (4) - आयात # 132.

4.132: जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज सब कुछ) ख़ास ख़ुदा ही का है और ख़ुदा तो कारसाज़ी के लिये काफ़ी है.

दुआ # 11 - सुरः अन-निसा (4) - आयात # 123.

4.123: न तुम लोगों की आरज़ू से (कुछ काम चल सकता है) न अहले किताब की तमन्ना से कुछ हासिल हो सकता है बल्कि (जै साकाम वै सादाम) जो बुरा काम करे गाउसे उसका बदला दिया जाएगा और फिर ख़ुदा के सिवा किसी को न तो अपना सरपरस्त पाएगा और न मददगार.

दुआ # 12 - सुरः अत-तौबा (9) - आयात # 59.

9.59: और जो कुछ ख़ुदा ने और उसके रसूल ने उनको अता फरमाया था अगर ये लोग उस पर राज़ी रहते और कहते कि ख़ुदा हमारे वास्ते काफी है (उस वक्त

नहीं तो) अनक़रीब ही खुदा हमें अपने फज़ल व करम से उसका रसूल दे ही दे गा हम तो यक़ीनन अल्लाह ही की तरफ लौ लगाए बै ठेहैं.

दुआ # 13 - सुरः अत-तौबा (9) - आयात # 129.

9.129: ऐ रसूल अगर इस पर भी ये लोग (तुम्हारे हुक्म से) मुँह फेें रतो तुम कह दो कि मे रेलिए ख़ुदा काफी है उसके सिवा कोई माबूद नहीं मै नेउस पर भरोसा रखा है वही अर्श (ऐसे) बुर्ज़ूग (मख़लूका का) मालिक है.

दुआ # 14 - सुरः अर-रअद (13) - आयात # 30.

13.30: (ऐ रसूल जिस तरह हमने और पै ग़म्बरभे जेथे) उसी तरह हमने तुमको उस उम्मत में भे जाहै जिससे पहले और भी बहुत सी उम्मते गुज़र चुकी हैं -ताकि तुम उनके सामने जो क़ुरान हमने वही के ज़रिए से तुम्हारे पास भे जाहै उन्हें पढ़ कर सुना दो और ये लोग (कुछ तुम्हारे ही नहीं बल्कि सिरे से) ख़ुदा ही के मुन्किर हैं तुम कह दो कि वही मे रापरवरदिगार है उसके सिवा कोई माबूद नहीं मै उसी पर भरोसा रखता हूँ और उसी तरफ रुज़ू करता हूँ.

दुआ # 15 - सुरः अज़-ज़ुमर (39) - आयात # 38.

39.38: और (ऐ रसूल) अगर तुम इनसे पूछो कि सारे आसमान व ज़मीन को किसने पै दाकिया तो ये लोग यक़ीनन कहेंगे कि ख़ुदा ने, तुम कह दो कि तो क्या तुमने ग़ौर किया है कि ख़ुदा को छोड़ कर जिन लोगों की तुम इबादत करते हो अगर ख़ुदा मुझे कोई तक़लीफ पहुँचाना चाहे तो क्या वह लोग उसके नुक़सान को (मुझसे) रोक सकते हैं या अगर ख़ुदा मुझ पर मे हरबानीकरना चाहे तो क्या वह लोग उसकी मे हरबानीरोक सकते हैं (ऐ रसूल) तुम कहो कि ख़ुदा मे रेलिए काफ़ी है उसी पर भरोसा करने वाले भरोसा करते हैं.

दुआ # 16 - सुरः अर-रूम (30) - आयात # 5.

30.5: वह जिसकी चाहता है मदद करता है और वह (सब पर) ग़ालिब रहम करने वाला है;

दुआ # 17 - सुरः अल-अहज़ाब (33) - आयात # 3.

33.3: और खुदा ही पर भरोसा रखो और खुदा ही कारसाजी के लिए काफी है.

दुआ # 18 - सुरः अत-तागाबून (64) - आयात # 13.

64.13: ख़ुदा (वह है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मोमिनो को ख़ुदा ही पर भरोसा करना चाहिए.

अध्याय 11- दुआ - परिवार पर रहम के लिए.

दुआ # 1 - सुरः अल-आराफ़ (7) - आयात # 151.

7.151: (तब) मूसा ने कहा ऐ मे रेपरवरदिगार मुझे और मे रेभाई को बख्श दे और हमें अपनी रहमत में दाख़िल कर और तू सबसे बढ़के रहम करने वाला है.

दुआ # 2 - सुरः अल-आराफ़ (7) - आयत # 155 और 156.

7.155: और मूसा ने अपनी क़ौम से हमारा वायदा पूरा करने को (कोहतूर पर ले जाने के वास्ते) सत्तर आदमियों को चुना फिर जब उनको ज़लज़ले ने आ पकड़ा तो हज़रत मूसा ने अर्ज़ किया परवरदिगार अगर तू चाहता तो मुझको और उन सबको पहले ही हलाक़ कर डालता क्या हम में से चन्द बे वूक्कों की करनी की सज़ा में हमको हलाक़ करता है ये तो सिर्फ ते रीआज़माइश थी तू जिसे चाहे उसे गुमराही में छोड़ दे और जिसको चाहे हिदायत दे तू ही हमारा मालिक है तू ही हमारे कुसूर को माफ कर और हम पर रहम कर और तू तो तमाम बख्शने वालों से कही बे हतरहै

7.156: और तू ही इस दुनिया (फ़ानी) और आख़िरत में हमारे वास्ते भलाई के लिए लिख ले हम ते रीही तरफ रूझू करते हैं ख़ुदा ने फरमाया जिसको मैं चाहता हूँ (मुस्तहक़ समझकर) अपना अज़ाब पहुँचा दे ताहूँ और मे रीरहमत हर चीज़ पर छाई हैं मै तो उसे बहुत जल्द ख़ास उन लोगों के लिए लिख दूँगा (जो बुरी बातों से) बचते रहेंगे और ज़कात दिया करेंगे और जो हमारी बातों पर ईमान रखा करेंगें.

दुआ # 3 - सुरः अल-फुर्क़ान (25) - आयात # 74.

25.74: और वह लोग जो (हमसे) अर्ज़ करते हैं कि परवरदिगार हमें हमारी बीबियों और औलादों की तरफ से ऑंखों की ठन्डक अता फरमा और हमको परहे ज़गारोंका पे शवाबना.

दुआ # 4 - सुरः अल-मोमिन (40/7-9) - आयत # 7 से 9.

40.7: जो (फ़रिश्ते) अर्श को उठाए हुए हैं और जो उस के गिर्दा गिर्द (तै नाम्र हैं (सब) अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तसबीह करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और मोमिनों के लिए बख़शिश की दुआएं माँ गाकरते हैं कि परवरदिगार ते रीरहमत और ते राइल्म हर चीज़ पर अहाता किए हुए हैं, तो जिन लोगों ने

(सच्चे) दिल से तौबा कर ली और ते रेरास्ते पर चले उनको बख्श दे और उनको जहन्नुम के अज़ाब से बचा ले:

40.8: ऐ हमारे पालने वाले इन को सदाबहार बाग़ों में जिनका तूने उन से वायदा किया है दाख़िल कर और उनके बाप दादाओं और उनकी बीवीयों और उनकी औलाद में से जो लोग ने कहो उनको (भी बख्श दें) बे शकतू ही ज़बरदस्त (और) हिकमत वाला है .

40.9: और उनको हर किस्म की बुराइयों से महफूज़ रख और जिसको तूने उस दिन (कयामत) के अज़ाबों से बचा लिया उस पर तूने बड़ा रहम किया और यही तो बड़ी कामयाबी है.

दुआ # 5 - सुरः अल-हश्र (59) - आयात # 10.

59.10: और उनका भी हिस्सा है और जो लोग उन (मोहाजे रीम्र के बाद आए (और) दुआ करते हैं कि परवरदिगारा हमारी और उन लोगों की जो हमसे पहले ईमान ला चुके मग़फे रतकर और मोमिनों की तरफ से हमारे दिलों में किसी तरह का कीना न आने दे परवरदिगार बे शक्तू बड़ा यफीक़ निहायत रहम वाला है.

अध्याय 12 -दुआ - स्वास्थ्य वापस पाने के लिए.

दुआ # 1 - सुरः फ़ाते हा(1) - आयत # 1 और 2.

1.1: अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपालु और अत्यन्त दयावान हैं।.

1.2: शं सा अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे सं सार का रब हैं .

दुआ # 2 - सुरः बनी इसराइल (17) - आयात # 80

17.80: और ये दुआ माँ गाकरो कि ऐ मे रेपरवरदिगार मुझे (जहाँ) पहुँचा अच्छी तरह पहुँचा और मुझे (जहाँ से निकाल) तो अच्छी तरह निकाल और मुझे ख़ास अपनी बारगाह से एक हुकूमत अता फरमा जिस से (हर क़िस्म की) मदद पहुँचे.

दुआ # 3 - सुरः अल-अं बिया (21) - आयात # 69.

21.69: (ग़रज़) उन लोगों ने इबराहीम को आग में डाल दिया तो हमने फ़रमाया ऐ आग तू इबराहीम पर बिल्कुल ठन्डी और सलामती का बाइस हो जा;

दुआ # 4 - सुरः अश-शु'अरा (26) - आयात # 68.

26.68: और इसमें तो शक ही न था कि तुम्हारा परवरदिगार यक़ीनन (सब पर) ग़ालिब और बड़ा मे हरबानहै.

दुआ # 5 - सुरः या'सीन (36) - आयत #s 81 से 83.

36.81: (भला) जिस (खुदा) ने सारे आसमान और ज़मीन पै दाकिए क्या वह इस पर क़ाबू नहीं रखता कि उनके मिस्ल (दोबारा) पै दाकर दे हाँ (ज़रूर क़ाबू रखता है) और वह तो पै दाकरने वाला वाक़िफ़कार है.

36.82: उसकी शान तो ये है कि जब किसी चीज़ को (पै दाकरना) चाहता है तो वह कह दे ताहै कि "हो जा" तो (फौरन) हो जाती है.

36.83: तो वह ख़ुद (हर नफ्स से) पाक साफ़ है जिसके क़ब्ज़े कुदरत में हर चीज़ की हिकमत है और तुम लोग उसी की तरफ लौट कर जाओगे.

दुआ # 6 - सुरः अल-हश्र (59) - आयात # 21.

59.21: अगर हम इस क़ुरान को किसी पहाड़ पर (भी) नाज़िल करते तो तुम उसको दे खतेकि ख़ुदा के डर से झुका और फटा जाता है ये मिसालें हम लोगों (के समझाने) के लिए बयान करते हैं ताकि वह ग़ौर करें.

दुआ # 7a - सुरः अत-तहरीम (66)- आयात # 8.

66.8: ऐ ईमानदारों ख़ुदा की बारगाह में साफ़ ख़ालिस दिल से तौबा करो तो (उसकी वजह से) उम्मीद है कि तुम्हारा परवरदिगार तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर कर दे और तुमको (बे हिश्तके) उन बाग़ों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें जारी हैं उस दिन जब ख़ुदा रसूल को और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाए हैं रूसवा नहीं करे गा(बल्कि) उनका नूर उनके आगे आगे और उनके दाहिने तरफ़ (रौशनी करता) चल रहा होगा और ये लोग ये दुआ करते होंगे परवरदिगार हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर और हमें बख्य दे बे शक्तू हर चीज़ पर कादिर है.

दुआ # 7b - सुरः क़ाफ़o (50) - आयात # 22.

50.22: और एक (आमाल का) गवाह उससे कहा जाएगा कि उस (दिन) से तू ग़फ़लत में पड़ा था तो अब हमने ते रेसामने से पर्दे को हटा दिया तो आज ते री निगाह बड़ी ते ज़है.

अध्याय 13 -दुआ - धर्म में दृढ़ता के लिए के लिए.

दुआ # 1 - सुरः अन-निसा (4) - आयत # 95 और 96.

4.95: माज़ूर लोगों के सिवा जे हादसे मुंह छिपा के घर में बै ठनेवाले और ख़ुदा की राह में अपने जान व माल से जिहाद करने वाले हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते (बल्कि) अपने जान व माल से जिहाद करने वालों को घर बै ठेरहने वालें पर ख़ुदा ने दरजे के एतबार से बड़ी फ़ज़ीलत दी है (अगरचे) ख़ुदा ने सब ईमानदारों से (ख्वाह जिहाद करें या न करें) भलाई का वायदा कर लिया है मगर ग़ाज़ियों को खाना नशीनों पर अज़ीम सवाब के एतबार से ख़ुदा ने बड़ी फ़ज़ीलत दी है:

दुआ # 2 - सुरः अल-आराफ़ (7) - आयात # 89.

7.89: हम अगरचे तुम्हारे मज़हब से नफरत ही रखते हों (तब भी लौट जाएं माज़अल्लाह) जब तुम्हारे बातिल दीन से ख़ुदा ने मुझे नजात दी उसके बाद भी अब अगर हम तुम्हारे मज़हब मे लौट जाएं तब हमने ख़ुदा पर बड़ा झूठा बोहतान बॉधा (ना) और हमारे वास्ते तो किसी तरह जायज़ नहीं कि हम तुम्हारे मज़हब की तरफ लौट जाएँ मगर हाँ जब मे रापरवरदिगार अल्लाह चाहे तो हमारा परवरदिगार

तो (अपने) इल्म से तमाम (आलम की) चीज़ों को घे रेहुए है हमने तो ख़ुदा ही पर भरोसा कर लिया ऐ हमारे परवरदिगार तू ही हमारे और हमारी क़ौम के दरमियान ठीक ठीक फै सलाकर दे और तू सबसे बे हतरफ़ै सलाकरने वाला है.

दुआ # 3 - सुरः युसूफ (12) - आयात # 33.

12.33: ऐ मे रेपालने वाले जिस बात की ये औरते मुझ से ख्वाहिश रखती हैं उसकी निस्वत (बदले में) मुझे क़ै द ख़ानों यादा पसन्द है और अगर तू इन औरतों के फ़रे बमुझसे दफा न फरमाएगा तो (शायद) मै उनकी तरफ माएल (झुक) हो जाँ ऊले तो जाओ और जाहिलों से युमार किया जाऊँ.

दुआ # 4 - सुरः अन-नहल (16) - आयात # 52.

16.52: और जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं (ग़रज़) सब कुछ उसी का है और ख़ालिस फरमाबरदारी हमे शाउसी को लाज़िम (जरूरी) है तो क्या तुम लोग ख़ुदा के सिवा (किसी और से भी) डरते हो?

दुआ # 5 - सुरः अल-कहफ़ (18) - आयात # 14.

18.14: और हमने उनकी दिलों पर (सब्र व इस्ते क़लालकी) गिराह लगा दी (कि जब दक़ियानूस बादशाह ने कुफ्र पर मजबूर किया) तो उठ खड़े हुए (और बे ताम्मुल (खटके)) कहने लगे हमारा परवरदिगार तो बस सारे आसमान व ज़मीन का मालिक है हम तो उसके सिवा किसी माबूद की हरगिज़ इबादत न करे ंगा

दुआ # 6 - सुरः अल-मोमिनून (23) - आयत # 93 और 94.

23.93: (ऐ रसूल) तुम दुआ करो कि ऐ मे रेपालने वाले जिस (अज़ाब) का तूने उनसे वायदा किया है अगर शायद तू मुझे दिखाए:

23.94: तो परवरदिगार ! मुझे उन ज़ालिम लोगों के हमराह न करना.

दुआ # 7 - सुरः अल-क़सस (28) - आयात # 88.

28.88: और ख़ुदा के सिवा किसी और माबूद की परसतिश न करना उसके सिवा कोई क़ाबिले परसतिश नहीं उसकी ज़ात के सिवा हर चीज़ फना होने वाली है उसकी हुकूमत है और तुम लोग उसकी तरफ़ (मरने के बाद) लौटाये जाओगे.

दुआ # 8 - सुरः अल-क़सस (28) - आयात # 55.

28.55: और जब किसी से कोई बुरी बात सुनी तो उससे किनारा कश रहे और साफ कह दिया कि हमारे वास्ते हमारी कारगुज़ारियाँ हैं और तुम्हारे वास्ते तुम्हारी कारस्तानियाँ (बस दूर ही से) तुम्हें सलाम है हम जाहिलो (की सोहबत) के ख्वाहॉ नहीं.

दुआ # 9 - सुरः अल-काफे रून (109) - आयत # 1 से 6.

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम हैं.

109.1: (ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ काफिरों!

109.2: तुम जिन चीज़ों को पूजते हो, मैं उनको नहीं पूजता,

109.3: और जिस (ख़ुदा) की मैं इबादत करता हूँ उसकी तुम इबादत नहीं करते:

109.4: और जिन्हें तुम पूजते हो मैं उनका पूजने वाला नहीं,

109.5: और जिसकी मैं इबादत करता हूँ उसकी तुम इबादत करने वाले नहीं:

109.6: तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मे रेलिए मे रादीन.

अध्याय 14 -दुआ - धर्म में दृढ़ता के लिए

दुआ # 1 - सुरः बनी इसराइल (17) - आयात # 24.

17.24: और उनके सामने नियाज़ (रहमत) से ख़ाकसारी का पहलू झुकाए रखो और उनके हक़ में दुआ करो कि मे रेपालने वाले जिस तरह इन दोनों ने मे रे छोटे पनमें मे रीमे रीपरवरिश की है.

दुआ # 2 - सुरः अल-अहकाफ़(46) - आयात # 15.

46.15: और हमने इन्सान को अपने माँ बाप के साथ भलाई करने का हुक्म दिया (क्यों कि) उसकी माँ ने रंज ही की हालत में उसको पे टमें रखा और रंज ही से उसको जना और उसका पे टमें रहना और उसको दूध बढ़ाई के तीस महीने हुए यहाँ तक कि जब अपनी पूरी जवानी को पहुँचता और चालीस बरस (के सिन) को पहुँचता है तो (ख़ुदा से) अर्ज़ करता है परवरदिगार तो मुझे तौफ़ीक़ अता फरमा कि तूने जो एहसानात मुझ पर और मे रेवालदै नपर किये हैं मैं उन एहसानों का युक्रिया अदा करूँ और ये (भी तौफीक दे) कि मैं ऐसा ने ककाम करूँ जिसे तू

पसन्द करे और मे रेलिए मे रीऔलाद में सुलाह व तक़वा पै दाकरे ते रीतरफ रूजू करता हूँ और मैं यक़ीनन फरमाबरदारो में हूँ.

दुआ # 3 - सुरः नूह (71) - आयात # 28.

71.28: परवरदिगार मुझको और मे रेमाँ बाप को और जो मोमिन मे रेघर में आए उनको और तमाम ईमानदार मर्दों और मोमिन औरतों को बख्श दे और (इन) ज़ालिमों की बस तबाही को और यादा कर!

अध्याय 15 - दुआ - दै विकमदद के लिए, जब अपनी बात या मासूमियत साबित कर रहे हों.

दुआ # 1 - सुरः अल-अनफ़ाल (8/8) - आयात # 8.

8.8: ताकि हक़ को (हक़) साबित कर दे और बातिल का मटियामे टकर दे अगर चे गुनाहगार (कुफ्फार उससे) नाखुश ही क्यों न हो.

दुआ # 2 - सुरः युसूफ (12) - आयात # 77.

12.77: (ग़रज़) इब्ने यामीन रोक लिए गए तो ये लोग कहने लगे अगर उसने चोरी की तो (कौन ता जुब है) इसके पहले इसका भाई (यूसुफ) चोरी कर चुका है तो यूसुफ ने (उसका कुछ जवाब न दिया) उसको अपने दिल में पोशीदा (छुपाये) रखा और उन पर ज़ाहिर न होने दिया मगर ये कह दिया कि तुम लोग बड़े ख़ाना ख़राब (बुरे आदमी) हो.

दुआ # 3 - सुरः अर-रअद (13) - आयात # 43.

13.43: और (ऐ रसूल) काफिर लोग कहते हैं कि तुम पै ग़म्बरनही हो तो तुम (उनसे) कह दो कि मे रेऔर तुम्हारे दरमियान मे रीरिसालत की गवाही के वास्ते ख़ुदा और वह शख़्श जिसके पास (आसमानी) किताब का इल्म है काफी है.

दुआ # 4 - सुरः अल-अनकबूत (29) - आयात # 52.

29.52: तुम कह दो कि मे रेऔर तुम्हारे दरमियान गवाही के वास्ते ख़ुदा ही काफी है जो सारे आसमान व ज़मीन की चीज़ों को जानता है-और जिन लोगों ने बातिल को माना और ख़ुदा से इन्कार किया वही लोग बड़े घाटे में रहेंगे.

दुआ # 5 - सुरः अल-अहकाफ़(46) - आयात #8.

46.8: क्या ये कहते हैं कि इसने इसको ख़ुद गढ़ लिया है तो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर मैं इसको (अपने जी से) गढ़ ले तातो तुम ख़ुदा के सामने मे रे कुछ भी काम न आओगे जो जो बातें तुम लोग उसके बारे में करते रहते हो वह ख़ूब जानता है मे रेऔर तुम्हारे दरमियान वही गवाही को काफ़ी है और वही बड़ा बख्शने वाला है मे हरबानहै.

दुआ # 6 - सुरः ताःहाः (20) - आयत # 25 से 28

20.25: मूसा ने अर्ज़ की परवरदिगार (मैं जाता तो हूँ),

20.26: मगर तू मे रेलिए मे रेसीने को कुशादा फरमा,

20.27: और दिले रबना और मे राकाम मे रेलिए आसान कर दे और मे री ज़बान से लुक़नत की गिरह खोल दे,

20.28: ताकि लोग मे रीबात अच्छी तरह समझें और;

दुआ # 7 - सुरः अल-अं बिया (21:112) - आयात # 112.

21.112: (आख़िर) रसूल ने दुआ की ऐ मे रेपालने वाले तू ठीक-ठीक मे रेऔर काफिरों के दरमियान फै सलाकर दे और हमार परवरदिगार बड़ा मे हरबानहै कि उसी से इन बातों में मदद माँ गीजाती है जो तुम लोग बयान करते हो.

दुआ # 8a - सुरः अल-मोमिनून (23) - आयात # 26.

23.26: नूह ने (ये बातें सुनकर) दुआ की ऐ मे रेपलने वाले मे रीमदद कर .इस वजह से कि उन लोगों ने मुझे झुठला दिया

दुआ # 8b - सुरः अल-मोमिनून (23) - आयात # 39.

23.39: तू मे रीमदद कर ख़ुदा ने फरमाया (एक ज़रा ठहर जाओ).

दुआ # 9 - सुरः अश-शु'अरा (26) - आयत # 12 से 14.

26.12: मूसा ने अर्ज़ कि परवरदिगार मैं डरता हूँ कि (मुबादा) वह लोग मुझे झुठला दे;

26.13: और (उनके झुठलाने से) मे रादम रुक जाए और मे रीज़बान (अच्छी तरह) न चले तो हारुन के पास पै ग़ामभे जदे (कि मे रासाथ दे);

26.14: (और इसके अलावा) उनका मे रेसर एक जुर्म भी है (कि मै नेएक शख्स को मार डाला था)

अध्याय 16- दुआ - माफ़ी में मदद के लिए

दुआ # 1 - सुरः मरयम (19/47) - आयात # 47.

19.47: इबराहीम ने कहा (अच्छा तो) मे रासलाम लीजिए (मगर इस पर भी) मैं अपने परवरदिगार से आपकी बख्शिश की दुआ करूँगा:

अध्याय 17 -दुआ - ज्ञान की उन्नति के लिए

दुआ # 1 - सुरः ताःहाः (20/114) - आयात # 114.

20.114: पस (दो जहाँ का) सच्चा बादशाह खुदा बरतर व आला है और (ऐ रसूल) कुरान के (पढ़ने) में उससे पहले कि तुम पर उसकी "वही" पूरी कर दी जाए जल्दी न करो और दुआ करो कि ऐ मे रेपालने वाले मे रेइल्म को और यादा फ़रमा.

अध्याय 18 दुआ- या ा शुरू करने से पहले, नया काम से पहले या मं जिल पर पहुँचने के लिए

दुआ # 1 - सुरः अल-मोमिनून (23/29) - आयात # 29.

23.29: और दुआ करो कि ऐ मे रेपालने वाले तू मुझको (दरख्त के पानी की) बा बरकत जगह में उतारना और तू तो सब उतारने वालो से बे हतरहै.

दुआ # 2 - सुरः हूद (11/88) - आयात # 88.

11.88: युएब ने कहा ऐ मे रीक़ौम अगर मै अपने परवरदिगार की तरफ से रौशन दलील पर हूँ और उसने मुझे (हलाल) रोज़ी खाने को दी है (तो मै भी तुम्हारी तरह हराम खाने लगूँ) और मै तो ये नहीं चाहता कि जिस काम से तुम को रोकूँ तुम्हारे बर ख़िलाफ (बदले) आप उसको करने लगूं मैं तो जहाँ तक मुझे बन पड़े इसलाह (भलाई) के सिवा (कुछ और) चाहता ही नहीं और मे रीताईद तो ख़ुदा के सिवा और किसी से हो ही नहीं सकती इस पर मै नेभरोसा कर लिया है और उसी की तरफ रुज़ू करता हूँ:

दुआ # 3 - सुरः अज़-ज़ुखरुफ़ (43) आयत # 13 से 14.

43.13: ताकि तुम उसकी पीठ पर चढ़ो और जब उस पर (अच्छी तरह) सीधे हो बै ठोतो अपने परवरदिगार का एहसान माना करो और कहो कि वह (ख़ुदा हर ऐब से) पाक है जिसने इसको हमारा ताबे दारबनाया हालॉकि हम तो ऐसे (ताक़तवर) न थे कि उस पर क़ाबू पाते

43.14: और हमको तो यक़ीनन अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है

अध्याय 19 -दुआ - प्रियजनों से मिलने के लिए.

दुआ # 1 - सुरः बक़रा (2/148) - आयात # 148.

2.148: और हर फरीक़ के वास्ते एक सिम्त है उसी की तरफ वह नमाज़ में अपना मुँह कर ले ताहै पस तुम ऐ मुसलमानों झगड़े को छोड़ दो और ने कियोंमे उन से लपक के आगे बढ़ जाओ तुम जहाँ कहीं होगे ख़ुदा तुम सबको अपनी तरफ ले आऐगा बे शकख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है.

दुआ # 2 - सुरः युसूफ (12/83) - आयात # 83.

12.83: (ग़रज़ जब उन लोगों ने जाकर बयान किया तो) याक़ूब न कहा (उसने चोरी नहीं की) बल्कि ये बात तुमने अपने दिल से गढ़ ली है तो (ख़ै)र सब्र (और ख़ुदा का) शुक्र ख़ुदा से तो (मुझे) उम्मीद है कि मे रेसब (लड़कों) को मे रेपास पहुँचा दे बे शकवह बड़ा वाकिफ़ कार हकीम है.

अध्याय 20 दुआ - निर्ण यकरने के लिए

दुआ # 1 - सुरः अज़-ज़ुमर (39) - आयात # 46.

39.46: (ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ ख़ुदा (ऐ) सारे आसमान और ज़मीन पै दा करने वाले, ज़ाहिर व बातिन के जानने वाले हक़ बातों में ते रेबन्दे आपस में झगड़ रहे हैं तू ही उनके दरमियान फै सलाकर दे गा

अध्याय 21 - दुआ - बारिश के लिए

दुआ # 1 - सुरः अर-रूम (30/48-50) - आयत #s 48 से 50.

30.48: ख़ुदा ही (क़ादिर तवाना) है जो हवाओं को भे जताहै तो वह बादलों को उड़ाए उड़ाए फिरती हैं फिर वही ख़ुदा बादल को जिस तरह चाहता है आसमान में फै लादे ताहै और (कभी) उसको टुकड़े (टुकड़े) कर दे ताहै फिर तुम दे खतेहो कि बूँदियां उसके दरमियान से निकल पड़ती हैं फिर जब ख़ुदा उन्हें अपने बन्दों में से जिस पर चहता है बरसा दे ताहै तो वह लोग खुशियाँ माानने लगते हैं

30.49: अगरचे ये लोग उन पर (बाराने रहमत) नाज़िल होने से पहले (बारिश से) शुरु ही से बिल्कुल मायूस (और मज़बूर) थे.

30.50: ग़रज़ ख़ुदा की रहमत के आसार की तरफ दे खोतो कि वह क्योंकर ज़मीन को उसकी परती होने के बाद आबाद करता है बे शकयक़ीनी वही मुर्दो को ज़िन्दा करने वाला और वही हर चीज़ पर क़ादिर है.

अध्याय 22 - दुआ - दान और परोपकार के काम के स्वीकृति के लिए.

दुआ # 1 - सुरः अद-दहर (76) - आयत # 9 और 10.

76.9: (और कहते हैं कि) हम तो तुमको बस ख़ालिस ख़ुदा के लिए खिलाते हैं हम न तुम से बदले के ख़ास्तगार हैं और न शुक्र गुज़ारी के:

76.10: हमको तो अपने परवरदिगार से उस दिन का डर है जिसमें मुँह बन जाएँ गे(और) चे हरेपर हवाइयाँ उड़ती होंगी.

अध्याय 23 - दुआ मूसा की, एक अजीब स्थिती के लिए

दुआ # 1 - सुरः अल-क़सस (28) - आयत # 33 और 34

28.33: मूसा ने अर्ज़ की परवरदिगार मै नेउनमें से एक शख्स को मार डाला था तो मै डरता हूँ कहीं (उसके बदले) मुझे न मार डालें;

28.34: और मे राभाई हारुन वह मुझसे (ज़बान में यादा) फ़सीह है तो तू उसे मे रेसाथ मे रामददगार बनाकर भे जकि वह मे रीतसदीक करे क्योंकि यक़ीनन मै इस बात से डरता हूँ कि मुझे वह लोग झुठला देंगे (तो उनके जवाब के लिए गोयाइ की ज़रुरत है).

अध्याय 24 - दुआ - हसद, बुरी नज़र, गै रमानव जीव से बचने के लिए

दुआ # 1 - सुरः अल-फ़लक (113) - आयत # 1 से 5.

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम हैं.

113.1: (ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं सुबह के मालिक की हर चीज़ की बुराई से,

113.2: जो उसने पै दाकी पनाह माँ गताहूँ,

113.3: और ऍंधे रात की बुराई से जब उसका ऍंधे रछा जाए,

113.4: और गन्डों पर फूँकने वालियों की बुराई से,

113.5: (जब फूँके) और हसद करने वाले की बुराई से

दुआ # 2 - सुरः अन-नास (114) - आयत # 1 से 6.

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम हैं.

114.1: (ऐ रसूल) तुम कह दो मैं लोगों के परवरदिगार,

114.2: लोगों के बादशाह,

114.3: लोगों के माबूद,

114.4: (शै तानी) वसवसे की बुराई से पनाह माँ गताहूँ,

114.5: जो (ख़ुदा के नाम से) पीछे हट जाता है जो लोगों के दिलों में वसवसे डाला करता है,

114.6: जिन्नात में से ख्वाह आदमियों में से.

अध्याय 25 दुआ - दज्जाल के चंगुल से बचने के लिए

दुआ # 1 - सुरः अल-कहफ़ (18) - आयत # 1 और 2.

18.1: हर तरह की तारीफ ख़ुदा ही को (सज़ावार) है जिसने अपने बन्दे (मोहम्मद) पर किताब (क़ुरान) नाज़िल की और उसमें किसी तरह की कज़ी (ख़राबी) न रखी.

18.2: बल्कि हर तरह से सधा ताकि जो सख्त अज़ाब ख़ुदा की बारगाह से काफिरों पर नाज़िल होने वाला है उससे लोगों को डराए और जिन मोमिनीन ने अच्छे अच्छे काम किए हैं उनको इस बात की खुशख़बरी दे की उनके लिए बहुत अच्छा अज्र (व सवाब) मौजूद है,

अध्याय 26 - दुआ - मुक्ती के लिए

दुआ # 1 - सुरः आले इमरान - आयत # 191 से 194.

3.191: जो लोग उठते बै ठतेकरवट ले ते(अलगरज़ हर हाल में) ख़ुदा का ज़िक्र करते हैं और आसमानों और ज़मीन की बनावट में ग़ौर व फ़िक्र करते हैं और (बे साख्ता) कह उठते हैं कि ख़ुदावन्दा तूने इसको बे कारपै दानहीं किया तू (फे ले अबस से) पाक व पाकीज़ा है बस हमको दोज़क के अज़ाब से बचा:

3.192: ऐ हमारे पालने वाले जिसको तूने दोज़ख़ में डाला तो यक़ीनन उसे रूसवा कर डाला और जुल्म करने वाले का कोई मददगार नहीं:

3.193: ऐ हमारे पालने वाले (जब) हमने एक आवाज़ लगाने वाले (पै ग़म्बर) को सुना कि वह (ईमान के वास्ते यूं पुकारता था) कि अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए पस ऐ हमारे पालने वाले हमें हमारे गुनाह बख्श दे और हमारी बुराईयों को हमसे दूर करे दे और हमें ने कोंके साथ (दुनिया से) उठा ले.

3.194: और ऐ पालने वाले अपने रसूलों की मार्फत जो कुछ हमसे वायदा किया है हमें दे और हमें क़यामत के दिन रूसवा न कर तू तो वायदा ख़िलाफ़ी करता ही नहीं.

दुआ # 2 - सुरः आले इमरान - आयात # 16.

3.16: (कि) हमारे पालने वाले हम तो (बे ताम्मुल) ईमान लाए हैं पस तू भी हमारे गुनाहों को बख्श दे और हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा.

दुआ # 3 - सुरः अल-फ़तह (48/14) - आयात 14.

48.14: और सारे आसमान व ज़मीन की बादशाहत ख़ुदा ही की है जिसे चाहे बख्श दे और जिसे चाहे सज़ा दे और ख़ुदा तो बड़ा बख्शने वाला मे हरबानहै.

दुआ # 4 - सुरः अल-माइदा - आयत # 83 और 84.

5.83: और तू दे खताहै कि जब यह लोग (इस कुरान) को सुनते हैं जो हमारे रसूल पर नाज़िल किया गया है तो उनकी ऑंखों से बे साख्ता(छलक कर) ऑंसू जारी हो जातें है क्योंकि उन्होंने (अम्र) हक़ को पहचान लिया है (और) अर्ज़ करते हैं कि ऐ मे रेपालने वाले हम तो ईमान ला चुके तो (रसूल की) तसदीक़ करने वालों के साथ हमें भी लिख रख.

5.84: और हमको क्या हो गया है कि हम ख़ुदा और जो हक़ बात हमारे पास आ चुकी है उस पर तो ईमान न लाएँ और (फिर) ख़ुदा से उम्मीद रखें कि वह अपने ने क्बन्दों के साथ हमें (बे हिश्तमें) पहुँचा ही दे ग्ा

दुआ # 5 - सुरः इब्राहीम - आयत # 40 और 41.

14.40: मे रेरब! मुझे और मे रीसन्तान को नमाज़ क़ायम करने वालाबना। हमारे रब! और हमारी ार्थना स्वीकार कर:

14.41: हमारे रब! मुझे और मे रेमाँ-बाप को और मोमिनों को उस दिन क्षमाकर दे ना जिस दिन हिसाब का मामला पे शआएगा।"!

दुआ # 6 - सुरः अल-फुर्क़ान - आयत # 65 और 66.

25.65: जो कहते है कि "ऐ हमारे रब! जहन्नम की यातना को हमसे हटा दे "। निश्चय ही उनकी यातना चिमटकर रहने वालीहै

25.66: निश्चय ही वह जगह ठहरने की दृ ट! से भी बुरी है और स्थान की दृ ट से भी.

दुआ # 7 - सुरः अल-मोमिनून - आयत # 93 और 94.

23.93: कहो, "ऐ मे रेरब! जिस चीज़ का वादा उनसे किया जा रहा है, वह यदि तू मुझे दिखाए:

23.94: तो मे रेरब! मुझे उन अत्याचारी लोगों में सम्मिलित न करना।".

दुआ # 8 - सुरः अश-शु'अरा - आयात 51.

26.51: हमें तो इसी की लालसा है कि हमारा रब हमारी ख़ताओं को क्षमा कर दें, क्योंकि हम सबसे पहले ईमान लाए।"

विषय सूची

क़ुरआनी दुआऐ 1

अध्याय 1- ईमान क़ो पुखता करने की दुआ. 2

अध्याय 2–दुआ - आभार और कृतज्ञता यक्त करने के लिए. 10

अध्याय 3–दुआ - रहम और परे शानीदूर होने के के लिए.......................... 14

अध्याय 4–दुआ - मार्गदर्शन के लिए 27

अध्याय 5–दुआ - औलाद के लिए... 35

अध्याय 6–दुआ - शहर में शां ती के लिए... 39

अध्याय 7–दुआ - जं ग में बचने, विपत्ति और दुश्मन के लिए...................... 40

अध्याय 8–दुआ - हिफाज़त के लिए 44

अध्याय 9–दुआ - धन और समृद्धि के लिए 51

अध्याय 10–दुआ - परमात्मा सबके जीवन में सहायता करे उसके लिए......... 55

अध्याय 11- दुआ - परिवार पर रहम के लिए. 63

अध्याय 12–दुआ - स्वास्‍ य वापस पाने के लिए. 66

अध्याय 12–दुआ - स्वास्‍ य वापस पाने के लिए. 66

अध्याय 13–दुआ - धर्म में दृढ़ता के लिए   के लिए. 70

अध्याय 14 –दुआ - धर्म में दृढ़ता के लिए 74

अध्याय 15 – दुआ - दैविक मदद के लिए, जब अपनी बात या मासूमियत साबित कर रहे हों. 76

अध्याय 16- दुआ - माफ़ी में मदद के लिए 80

अध्याय 17 –दुआ - ज्ञान की उन्नति के लिए 81

अध्याय 19 –दुआ - ियजनों से मिलने के लिए. 83

अध्याय 20 दुआ - निर्णय करने के लिए 84

अध्याय 21 – दुआ - बारिश के लिए 85

अध्याय 22 – दुआ - दान और परोपकार के काम के स्वीकृति के लिए. 86

अध्याय 23 – दुआ मूसा की, एक अजीब स्थिती के लिए 87

अध्याय 24 – दुआ - हसद, बुरी नज़र, गै रमानव जीव से बचने के लिए 88

अध्याय 25 दुआ - द जाल के चं गुल से बचने के लिए 90

अध्याय 26 – दुआ - मुक्ती के लिए 91

विषय सूची 95